भारत में कम्युनिस्ट पार्टियों का उदय एवं विकास

डॉ० गीतांजलि

1962 में चीन द्वारा भारत पर आक्रमण को लेकर भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी में जबर्दस्त भूचाल आ गया। एक हिस्सा यह मानने को तैयार नहीं था कि कोई कम्युनिस्ट देश दूसरे देश पर आक्रमण करेगा। दूसरा हिस्सा चीन की इस कार्रवाई को सही नहीं समझता था। परिणामतः कम्युनिस्ट पार्टी में विभाजन हो गया। एक धड़ा कम्युनिस्ट पार्टी से अलग हो गया और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के नाम से अलग पार्टी बना ली। 1964 में यह विभाजन हुआ था। दोनों पार्टियों ने अपनी अलग–अलग कांफ्रेंस आयोजित की और नये सिरे से दोनों ने अपनी नीति एवं सिद्धांत बनाये। उसके बाद दोनो पार्टियों ने अपनी नीतियों में कोई बदलाव नहीं किया है। नई आर्थिक नीतियों के संदर्भ में जरूर कुछ तब्दीलियाँ की गई हैं।

आजादी के पहले भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने भारतीय क्रांति को दो चरणों वाली प्रक्रिया बताया जिसमें वर्तमान साम्राज्यवाद विरोधी, सामंत विरोधी चरण (एक राष्ट्रीय जनवादी चरण) के बाद पूंजीवाद विरोधी (समाजवादी) चरण आयेगा। पार्टी ने मोटे तौर से मजदूर वर्ग, मध्यम वर्ग एवं राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के राष्ट्रीय जनवादी मोर्चे की रणनीति का अनुसरण किया।